Part 1

प्रश्न (28) श्री अमर जी रचित ‘ मौ - संतान ’ शीर्षक कविताक सारांश लिखू ।

उतर - पं0 श्री चन्द्रनाथ मिश्र ‘ अमर ’ बहुमुखी प्रतिभाक धानी साहित्यकार छथि । उपन्यास , कविता , एकांकी , कथा , निबंध , अनुवाद , सम्पादन प्राय सभ विधामे हिनक योगदान अछि । आचार्य सुमन हिनक सम्पूर्ण व्यक्तित्वकेँ एकठाम समेटि क कहने छथि - साहित्य शतदल , प्रत्येक दल पर अमरजीक रमणीयता सुरभित भेटत । जहिना लेखन ताहिना वाचन , जहिन सम्पादन - प्रकासारण , जहिना शोध - संधान , तहिना संग्रह संकलन - प्रत्येक समकोणक द्विभुज समतूल अछि ।

मनु संतान सर्वप्रथम ‘ आशा - दिशा ’ नामक पोथी प्रकाशित भेल 1975 ई0 मे । स्वतंत्र भारत मे नव - नव निर्माण भ रहल अछि । नव भाव विचारसँ अनुप्राणित देश आ जगत विज्ञानक बल पर विकासोन्मुख अछि । परंच एहि नव - निर्माण मे मानवता आ दानवताक द्वंद द्वंद युध्द सेहो भ रहल अछि ।

“ क्षितिपर जलपर आर पवन पर ,

वितल तलातल सकल भुवन पर ,

अन्तरिक्षसँ पार गगन पर ,

चन्द्रलोक नक्षत्र लोक धरि

अपन सफल अभियान

करय नित नूतन मनु - संतान ।

मानव विज्ञानक बल पर जल ,थल , अन्तरिक्ष सकल भुवन पर प्रगतिक अभियान पर अछि । नित नव - नव अनुशंधान क रहल । एक एक नक्षत्रक जन्म कुण्डली बुझबा - समक्षबा लेल तत्पर अछि । चन्द्रलोक तक धरि त अभियानो सफल रहलैक ।

तन पर मन पर , जड़ चेतना पर

प्रकृति प्रदत सकल साधन पर

पंचत्व निर्मित कण - कण पर

आर अधिक की ? जन्म मरण पर

स्वामित्वक अभियान

करय नित नूतन मनु -सन्तान ।

तन - मन - जड़ चेतन , प्रकृति प्रदत सभ साधन पर , आर जन्म मरण पर स्वामित्व स्थापित करबा लेल मानव - नित नव - नव अनुसंधान क रहल अछि । भ्रमन हेतु मानव धरतीसँ अनंत आकाशमे विचरण करबा हेतु विज्ञानक बल पर यानक - अभियानमे लागल अछि । वस्तुत: सर्व शक्तिमान विग्यान अछि , जकर कर्ता मानव ।

किन्तु विजय नहि अहंभाव पर

मनक कलुष , विकृति प्रभाव पर

मनुज चलय दनुजक स्वभाव पर

तकनहुँ पाबि रहल नहि कतहु दानवता निदान

विकल आकुल मन मनु - संतान ।

यथार्थ विज्ञान सर्वशक्तिमान अछि , परंच मानव कें अहंभाव पर मनक कलुह भाव पर के विजय प्राप्त करबामे समर्थ भ सकल अछि ? नहि । मानव त दानवक स्वभाव धारण क दैछ । आवश्यकता अछि , दानवी प्रवृतिक निवारण से की विग्यान क सकैत अछि । ?

यैह कारण अछि जे आइ मानवता कानि रहल अछि । दानवताक बला - बल मानवता दुब्बर भ गेल ।